अध्याय–2

भारतीय शास्त्रीय नृत्यों के पारिभाषिक शब्द

आमद--'आमद' शब्द का अर्थ है आगमन या प्रवेश। इस शब्द का प्रयोग मुगलकाल से माना जाता है जब कोई नर्त्तक या नर्त्तक मंच पर उपस्थित होकर किसी खास अंदाज में नृत्य करता है तो उसे आमद कहते हैं। अर्थात नृत्य के बोलों के साथ एक विशेष अंदाज में सभासदों के समक्ष नर्त्तक का आगमन ही आमद कहलाता है।

तोड़ा– बोलों का ऐसा समूह जिसमें भिन्न-भिन्न लय एवं तिहाइयाँ होती है तोड़ा कहलाती है। नृत्य के साथ-साथ नृत्त अंगों की इसमें बहुलता होती है।

सलामी--'सलामी' शब्द मुगलकालीन है। मुगल दरबार में नृत्यकार राजा तथा सभासदों को झुक-झुक कर सलाम करते थे। अतः जिस नृत्य के बोल को नाचकर सभा को प्रणाम किया जाता है उसे सलामी कहते हैं। हाँलाकि अब राजदरबार में नृत्य नहीं किया जाता है फिर भी किसी सांस्कृतिक सम्मेलन में जब नर्त्तक दर्शक को विशिष्ट अंदाज में तोड़ा नाचकर प्रणाम करते हैं तो उसे सलामी कहते हैं।

तिहाई–नृत्य के किसी भी छोटे-छोटे बोल को किसी भी मात्रा से उठकर तीन बार नाचकर बोलकर या बजाकर सम पर आते हैं तो उसे तिहाई कहते हैं। तिहाई का अंतिम बोल सम को दर्शाता है। इसे तीया भी कहा जाता है।

ताली--किसी भी ताल के ठेकों में जिन मात्राओं पर ताली बजाई जाती है उसे ताली कहते हैं। ठेकों में तालियों का स्थान तालों के विभाग और चलन के अनुसार होता है। भातखंडे ताललिपि पद्धति में ताली के स्थान पर तालियों की संख्या लिखी जाती है। ताली को 'भरी' भी कहते हैं।

खाली–ठेके के जिस स्थान पर ताली नहीं लगाकर केवल ताल के विभाग का रूप दिखाने के लिए हाथ से इशारा कर दिया जाता है उसे खाली या फाँक कहते है। भातखंडे ताललिपि पद्धति में खाली को *o दर्शाया जाता है।

ताल--नृत्य में शास्त्रानुकूल समय को नापने की क्रिया को ताल कहते हैं। जिसका निर्माण मात्राओं के योग से होता है। गीत वाद्य, नृत्य सभी ताल पर ही आश्रित होते हैं।

सम--ताल या ठेके की पहली मात्रा को सम कहते हैं। इस स्थान पर ताल का विशेष झुकाव या वजन होता है। सम से ही वादक अपना वादन और नर्त्तक अपना नृत्य शुरू करता है। भातखंडे ताललिपि पद्धति में सम को (×) से दर्शाया जाता है।

विभाग--किसी भी ताल को उसके चलन या स्वरूप के अनुसार मात्राओं को विभाजित किया जाता है। इस अलग-अलग विभाजित खंड को विभाग कहते हैं। यह एक या एक से अधिक मात्राओं में हो सकता है। अलग-अलग तालों में विभागों की रचना अलग-अलग होती है। भातखंडे ताललिपि पद्धति में इसे (।) चिह्न से दर्शाया जाता है।

तत्कार–प्रत्येक ताल के कुछ ठेके होते हैं। इन तालों को पैरों से निकालने के लिए कथक नृत्य में कुछ वर्णों का प्रयोग किया जाता है। इन वर्णों को पैरों के आघात द्वारा निकाला जाता है जिसे तत्कार कहते हैं। ततकार

का मुख्य बोल ता थेई, तत, है। विद्वानों के अनुसार ता का अर्थ तन, थेई अर्थ थल तथा तत् का अर्थ ईश्वर है। अर्थात् शरीर द्वारा इस पृथ्वी पर जो नृत्य किया जाय वह ईश्वर के लिए हो। जिस प्रकार ठेके के प्रकार होते हैं उसी प्रकार तत्कार के भी प्रकार होते हैं। किसी भी ताल का तत्कार उसके ठेका के शास्त्रीय स्वरूप के अनुसार होता है।

प्रश्न

1. आमद की परिभाषा लिखें।
2. 'सलामी' शब्द की उत्पत्ति किस काल में हुई वर्णन कीजिए।
3. ताली की परिभाषा देते हुए बताएँ कि तीन ताल में किस-किस मात्रा पर ताली बजाई जाती है?
4. 'सम' किसे कहते हैं?
5. 'तत्कार' शब्द की व्याख्या करें।

अड़वु– भरतनाट्यम के प्रस्तुतीकरण में नृत्त का प्रारम्भिक भाग, जिसमें हाथ, पैर, सिर, आँखें तथा शरीर के अन्य भाग एक दूसरे से संतुलन और सामन्जस्य रखते हुए संचालित होते हैं अड़वु कहते हैं। अड़वु के चार लक्षण होते हैं – स्थानक (अड़वु के प्रारम्भ तथा अन्त में दिखाई जाने वाली स्थिर मुद्रा), नृत्त हस्त (अड़वु में प्रयुक्त हस्त मुद्रा,) चारी (पैरों तथा हाथों का संचालन) तथा हस्तक वेश (सम्पूर्ण नृत्य में प्रयुक्त हाथों की मुद्रा)। विद्वानों द्वारा अड़वु के और भी भेद विकसित किए गए हैं जैसे–तट्टू, मेट्टू, नट्टू, कट्टू, एकरू-कट्टू, मुक्ट्यू, सरूक्कल अड़वु, जारू, जाति, तांडव, अरूडि, नडे, भ्रमरी, रगाक्रमण, एकपाद-तांडव इत्यादि।

अभिनय–ओडिसी नृत्य में अभिनय का स्थान सर्वोपरी है। अभिनय की परिभाषा हम इस प्रकार दे करते है–

"मन की भावना मुख और हस्त द्वारा दर्शकों के सम्मुख अभिव्यक्त करने को अभिनय कहते है"

अभिनय मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं –

(1) आंगिक (2) वाचिक (3) आहार्य (4) सात्विक

(1) आंगिक–कर, पाश्व, कटि, पद, गृवा आदि अंग कहलाते है यथा–अंम, प्रत्यंग तथा उपांग द्वारा जो अभिनय व्यक्त किया जाय उसे आंगिक कहते हैं।

(2) वाचिक–काव्य, नाटक या कोई भी उपन्यास, गीत आदि को वचन द्वारा अभिनय करने को वाचिक कहते हैं।

(3) आहार्य–वस्त्र, अलंकार और साज, सज्जा को आहार्य कहते हैं। इन सबसे विभूषित होकर जो स्त्री अभिनय करती है उसे आहार्य कहते हैं।

(4) सात्विक–अपने मन की भावना को भाव रस द्वारा अभिव्यक्त करने को सात्विक भाव कहते हैं। सात्विक भावना मनोवृति द्वारा स्वतः ही निर्गत होता है। यह आठ प्रकार का होता है (1) स्तब्ध (2) खेद (3) रोमांच (4) स्वरभंग (5) वैभनस्य (6) विवर्ण (7) अश्रु, (8) प्रलय।

प्रश्न

1. अभिनय किसे कहते हैं, परिभाषित करें।
2. अभिनय कितने प्रकार के होते हैं नाम लिखें।
3. आंगिक तथा सात्विक अभिनय को विस्तार से लिखें।
4. अडायू शब्द की व्याख्या करें।

■ ताण्डव एवं लास्य

(1) **वीर एवं रौद्र**–रस से ताण्डव नृत्य की उत्पत्ति हुई है। यह पुरुष प्रधान नृत्य है। ताण्डव नृत्य का पद विन्यास (पैर की गति) अत्यंत वेगपुर्ण एवं कठोर है। भाव, भंगिमा से प्रलय का लक्षण परिलक्षित होता है। वक्तव्यों से भयानक वातावरण के भाव को सृष्टि होती है। ताण्डव नृत्य का मुख्य अंश बादक होता है। विभिन्न छंद लय में बाद्य की बारिकियों से नृत्य को उत्साह मिलता है। भगवान शिव का ताण्डव नृत्य प्रलय स्वरूप है। उनके प्रत्येक अंग से ज्वाला प्रज्वलित हो रहा था जिससे देवता और समस्त प्राणी जगत् त्राहि-त्राहि कर रहे थे। क्रोधाग्नि के परिलक्षण में वीर एवं रौद्र रस भरा होता है इसे ही ताण्डव नृत्य कहते हैं।

(2) **लास्य**–शृंगार, लज्जा एवं विनय का परिचायक है। लास्य में प्रेम का अंश है। यह कोमल भाव का स्त्रीप्रधान नृत्य है। शिव पार्वती ने प्रेम एवं शान्ति का संदेश प्रदान किया था। लास्य में पैर अति कोमल तरीके से चलाया जाता है। लास्य नृत्य देखने से हर कोई आत्म विभोर हो जाता है। यह नृत्य शास्त्र के अनुसार कला भारती प्रणाली द्वारा तीन वैज्ञानिक पद्धति में विभक्त किया गया है –

(1) नृत्य (2) रस (3) अभिनय

मुद्रा–अभिनय दर्पण के अनुसार संयुक्त हस्त तथा असंयुक्त हस्त मुद्रा का वर्णन है। संयुक्त हस्त 23 प्रकार तथा असंयुक्त हस्त 28 प्रकार का है–

हस्त मुद्रा अर्थात हम प्रतिदिन हर पल हर क्षण अपने दैनिक जीवन में इनका प्रयोग किया करते हैं, अभिनय दर्पण के अनुसार प्रत्येक मुद्रा का नाम उसके कर्म से है –

संयुक्त हस्त—23 प्रकार माना गया है जो इस प्रकार है–

(1) अंजलि (2) कपोत (3) कर्कट (4) स्वास्तिक (5) दोल हस्त (6) पुष्पपुटः (7) उत्संग (8) शिवलिंग (9) कटका वर्धन (10) कर्त्तरी स्वास्वितक (11) शकट (12) शंस (13) चक्र (14) संपुट (15) पाश्य (16) तिलक (17) मत्स्य (18) कूर्म (19) वराह (20) गरूड़ (21) नागबन्ध (22) खट्वा (23) भेरून्ड।

प्रश्न

1. ताण्डव एवं लास्य का वर्णन करें।

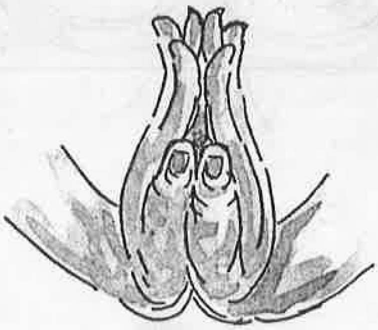

अंजली

कपोत

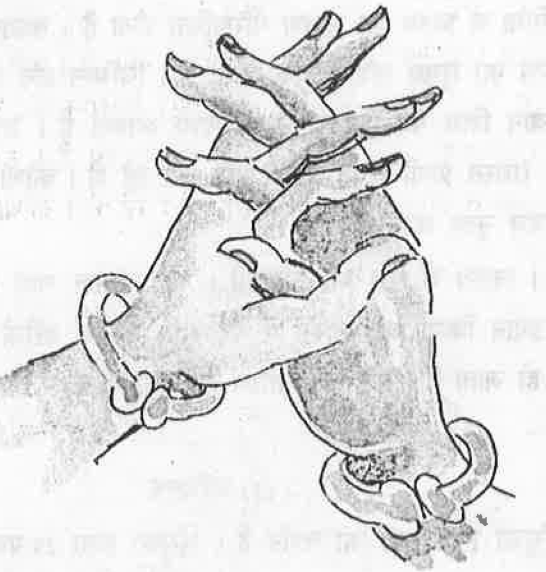

कर्कट

स्वास्तिक

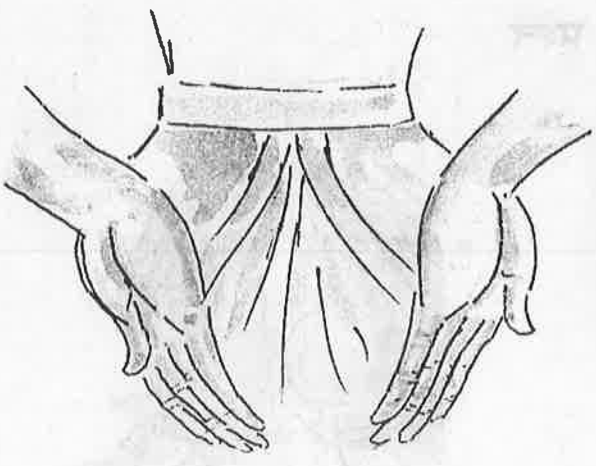

डोला

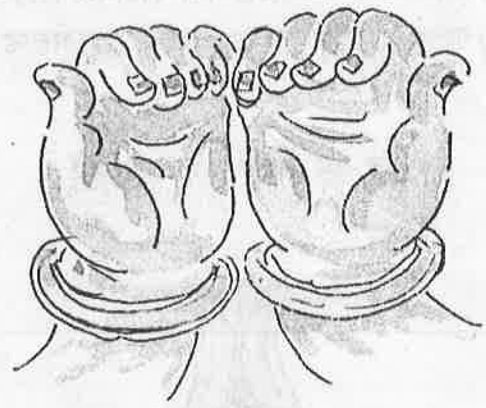

पुष्पुट

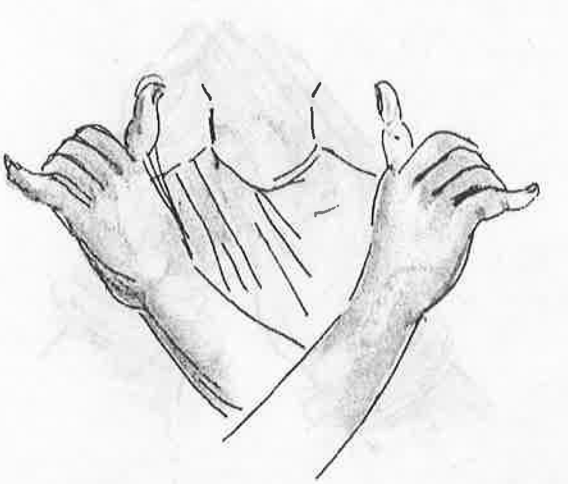

उत्संग

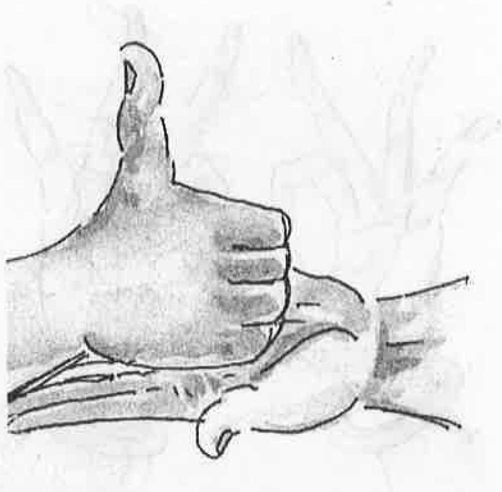

शिवलिंग

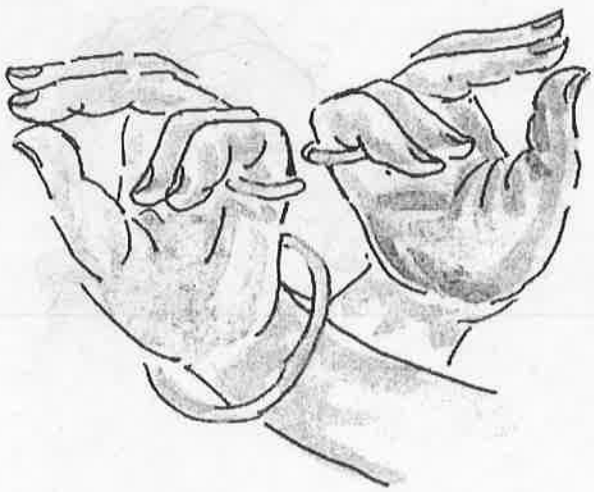

कटकवर्धन

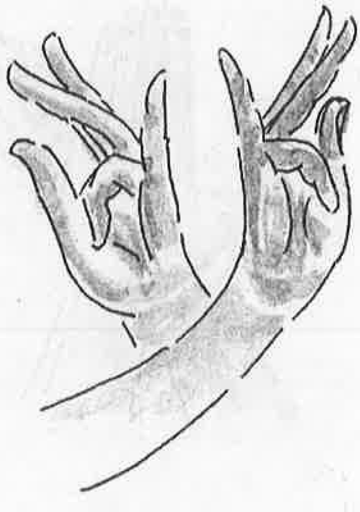

कर्तरी स्वास्तिक

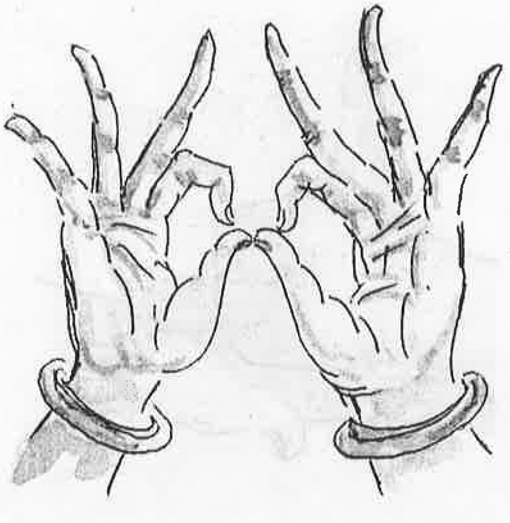

शकट

शंख

चक्र

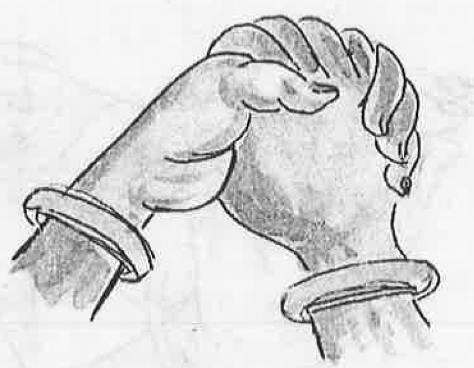

सम्पुट

पाश

कीलक

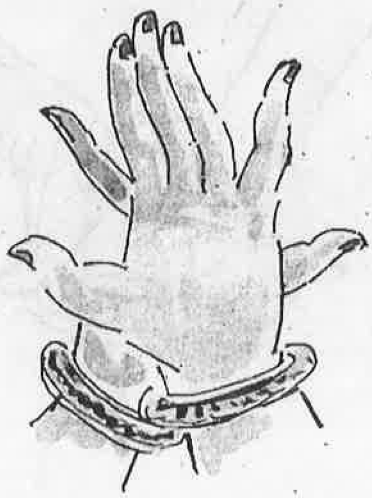

मत्स्य

कूर्म

वराह

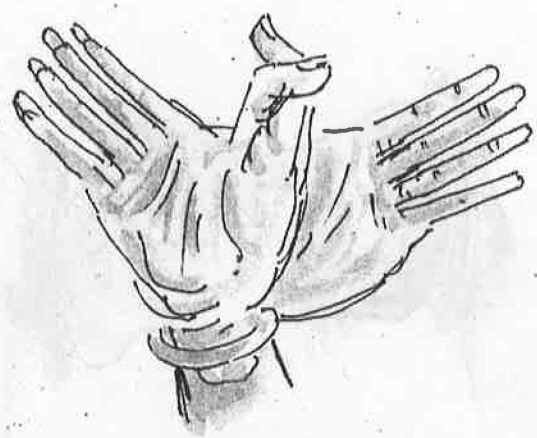

गरुड़

नागबन्ध

खट्वा

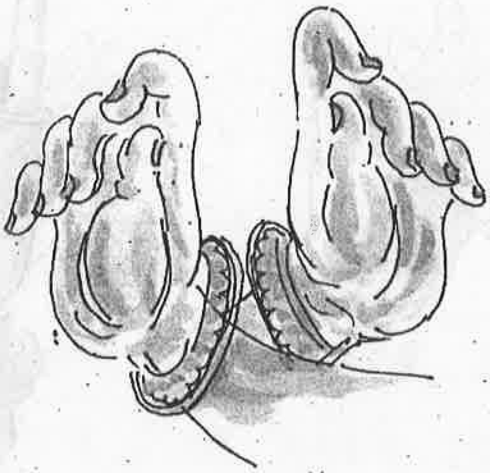

भेरून्ड

प्रश्न

1. संयुक्त हस्त कितने प्रकार के होते हैं ?

2. किन्हीं 5 सयुक्त हस्त का चित्र बना कर नाम लिखें।

अभिनय दर्पण के अनुसार असंयुक्त हस्त मुद्रा 28 प्रकार के हैं, प्रतिदिन के जीवन में हम जाने अनजाने में मुद्राओं का प्रयोग करते हैं–

इन मुद्राओं का विधिवत् नाम निम्नलिखित हैं–

(1)	पातक हस्त	(2)	त्रिपताक हस्त	(3)	अर्ध पताक हस्त
(4)	कर्त्तरीमुख	(5)	मयूर	(6)	अर्ध चन्द्र
(7)	अड़ाल	(8)	शुकतुण्ड	(9)	मुष्ठी
(10)	शिखर	(11)	कपित्थ	(12)	कटका मुख
(13)	सूची	(14)	चन्द्रकला	(15)	पद्मकोष
(16)	सर्पसिर	(17)	मृगसिर	(18)	सिंह मुख
(19)	कांगुल	(20)	अल्पद्म	(21)	चतुर
(22)	भ्रमरी	(23)	हंसास्य	(24)	हंसपक्ष्यक:
(25)	संदश	(26)	मुकुल	(27)	ताम्रचूड़
(28)	त्रिशूल				

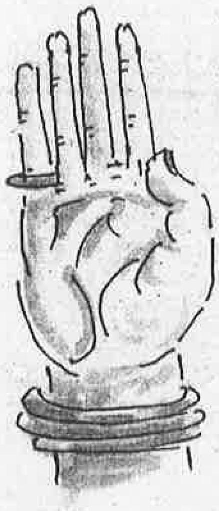

पताका

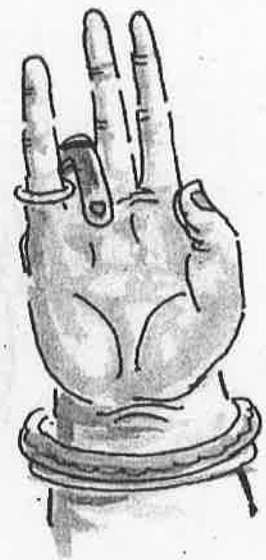

त्रिपताका

अर्धपताक

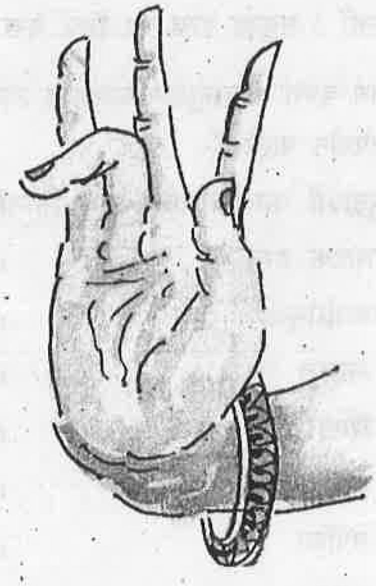

कर्तरीमुख

मयूर

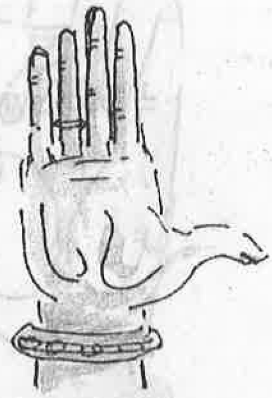

अर्धचन्द्र

अराल

शुकतुण्ड

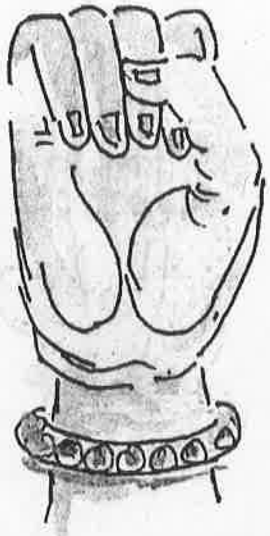

मुष्ठि

शिखर

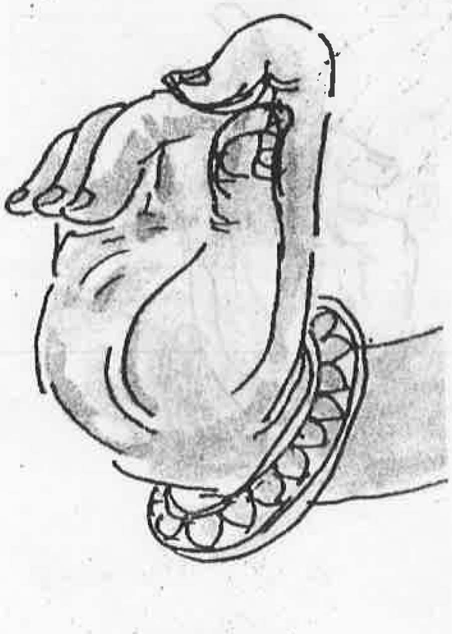

कपित्थ

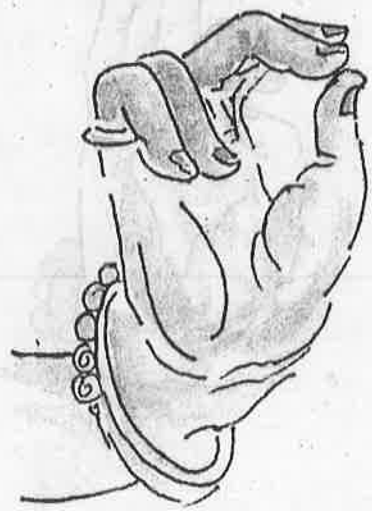

कटकामुख

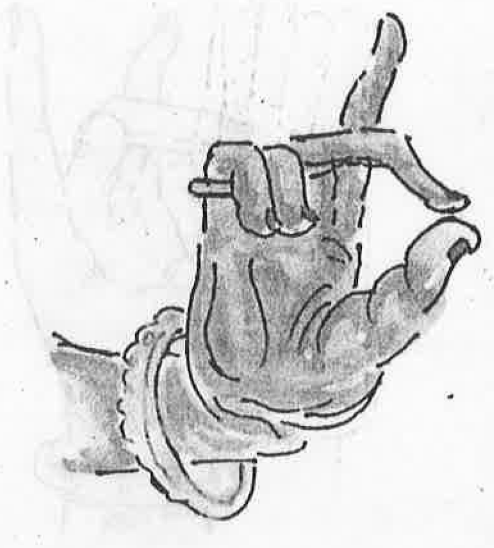

सुचि

चन्द्रकला

पद्मकोष

सर्पशीर्ष

मृगशीर्ष

सिंहमुख

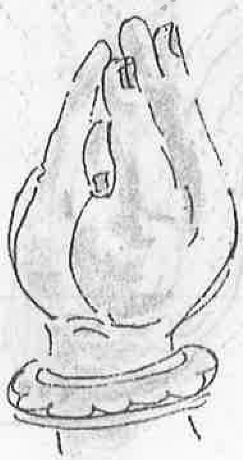

कांगूल

अलपद्म

चतुर

भ्रमर

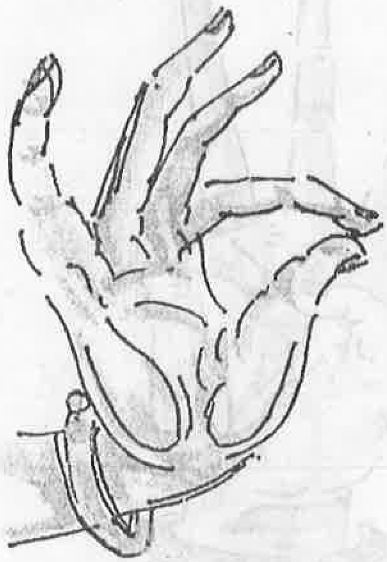

हंसास्य

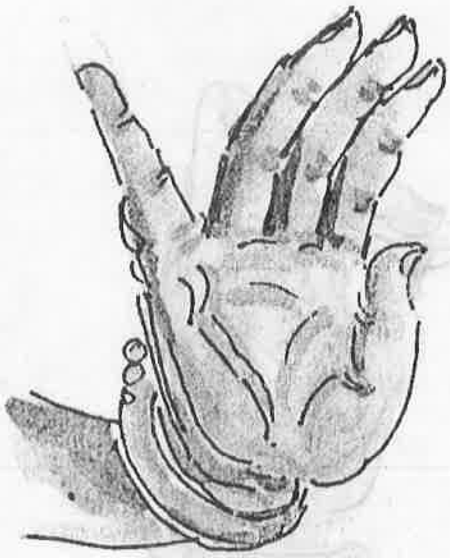

हंसपक्ष

संदश

मुकुल

ताम्रचूर

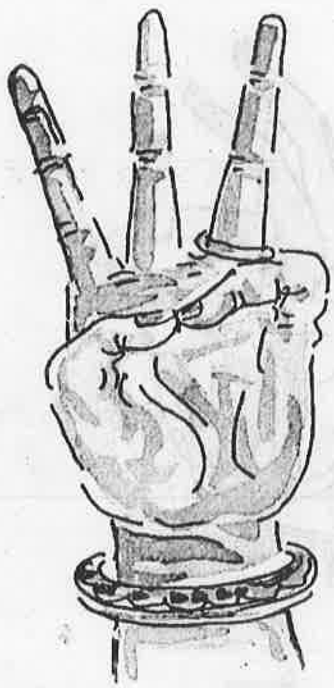

त्रिशूल

प्रश्न

1. असंयुक्त हस्त कितने प्रकार के होते हैं ?

2. किन्हीं 5 अंसयुक्त हस्त का सचित्र वर्णन करें ।

चाली–चाली को ओडिसी नृत्य में हम चारी कहते है चारी या चाली अर्थात् चलना —

नृत्य में पात्र एक स्थान पर रह कर विभिन्न प्रकार से पद (पैर) को चलाता या चलाती है। इसी पद चलन को पद चारिका या चारि कहते हैं ।

अभिनय दर्पण के अनुसार चारी अथवा चाली 8 प्रकार के होते हैं —

(1) चलन चारि

(2) चक्रंमन चारि

(3) शरण चारि

(4) वेगिनी चारि

(5) कुटन चारि

(6) लुंठन चारि

(7) लोलित चारि

(8) विषम संचार चारि

प्रश्न

(1) चाली किसे कहते हैं ?

(1) अभिनयदर्पण के अनुसार चाली के प्रकार लिखें ।

❑